लोभ
100 तथ्य

जे.के.संघवी

श्री नेमिनाथ भगवान
(श्री गिरनारजी तीर्थ)

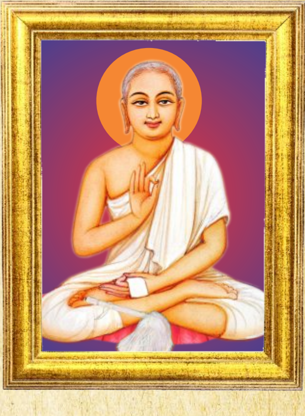

अनंत लब्धि निधान
गुरु गौतम स्वामीजी

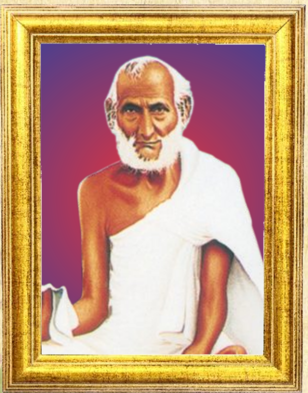

प.पू. कलिकाल कल्पतरू
श्रीमद्‌विजय
राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

।। श्री शांतिनाथाय नमः।।
।। श्रीमद् राजेन्द्रसूरि गुरुभ्यो नमः।।

लोभ-100 तथ्य

संपादन – संकलन
जे.के. संघवी

✻ सुकृत सहयोगी ✻

**श्राविका विमलादेवी जे.के. संघवी की
गिरनार में चातुर्मासांतर्गत
द्वि मासिक आराधना अनुमोदनार्थ
आहोर निवासी जुगराज, कांतिलाल,
महेन्द्र, सुरेन्द्र, धीरज, संदीप, राज, जैनम, अक्षत, परम, हितम,
रिया, आर्या, थविरा, विराया
श्रीश्रीमाल वर्धमान गौत्रिय जिनवचन–प्रेमी परिवार
फर्म – कल्पतरु ज्वलर्स – (थाने)**

✻ प्रकाशक ✻
कल्पतरु प्रकाशन
305, स्टेशन रोड, संघवी भवन, शंकर मंदिर के सामने
थाने (वे.) 400601 (महाराष्ट्र)
भ्रमण भाष : 816 905 3304

✻ प्रथम संस्करण – प्रति 2000

✻ मूल्य – सदुपयोग

✻ प्रकाशन वर्ष – सन् 2024 सितंबर

समर्पणम्

✻ जिन्होंने व्यापार में कभी अनीति नहीं की
✻ जीवन में सदैव सन्तोष धारण किया
ऐसे निर्लोभी जीवन जीने वाले
हमारे परिवार में सुसंस्कारों का
बीजारोपण करनेवाले

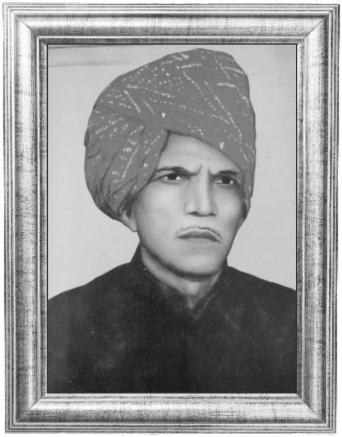

परम पूज्य पिताश्री
स्व. संघवी कुंदनमलजी भुताजी श्रीश्रीमाल
(आहोर–थाने)

को
सादर-समर्पित
यह पुष्प

सौधर्मबृहत्तपागच्छीय गच्छाधिपति आचार्य श्री जयानन्दसूरीश्वरजी के

आशीर्वचन

सुश्रावक जुगराजजी

धर्मलाभ!

आपकी नई पुस्तक '**लोभ-100 तथ्य**' के विषय में जाना।

महापुरुषों ने '**लोहो सव्वविणासणो**' कहा है।

पूर्व में आपने कई पुस्तकें लिखी-सम्पादित की हैं। सभी पुस्तकें ज्ञानवर्धक रही है। आपकी यह पुस्तक भी हमारे उपर रहे हुए लोभ के साम्राज्य को हटाने में निमित्त बने, इसी शुभकामना के साथ

जयानंद

वि.सं. 2081, जेठ सुद पूनम

लोभ से खानाखराबी

सभी पापों का बाप मिथ्यात्व है।

तो, सभी कषायों का बाप 'लोभ' है।

यह सायलन्ट किलर है।

क्षपकश्रेणी आरुढ़ महात्मा को भी भारी पड़ता है।

लोभ सभी दुर्गुणों की खान है।

सुश्रावक जे.के. संघवीजी ने इस आतंकवादी के 100 तथ्य ढूंढ निकाले हैं। बहुत मननीय है।

लोभ से बचना मुश्किल है, लेकिन अशक्य नहीं।

इसकी चाबियाँ इन 100 तथ्यों में आपको प्राप्त हो सकती है।

तत्वज्ञान और खुद के अनुभव को इस पुस्तिका में उतारकर वाचक को लोभ का संघवीजी ने अच्छा परिचय कराया है।

अतः सांसारिक जीवन सुरक्षित रखने के लिये और आध्यात्मिक जीवन को सुदृढ़ और सम्यक् बनाने के लिये आपको यह पुस्तिका पढ़नी आवश्यक है।

संघवीजी ऐसे आतंकवादी कषायों और दोषों पर संशोधन करके श्री संघ में घोषित करते रहे ताकि हम उससे बच सकें।

श्रुतसेवा के लिए बहुत आशीर्वाद।

पं. हृदयरत्नविजय

कोंकण शत्रुंजय तीर्थ, थाने
वि. सं. 2080, श्रावण सुद 12

धर्मश्रद्धावन्त सुश्रावक जे.के. संघवी (जुगराजजी) ने कमाल कर दिया है। रात्रि भोजन के 100 तथ्य, ब्रह्मचर्य के 100 तथ्य, सामायिक 100 तथ्य, मृत्यु 100 तथ्य, गौतमस्वामी 100 तथ्य आदि अनेक पुस्तकें लिखकर सही में शासन की अद्भुत प्रभावना की है। ऐसा लोकभोग्य साहित्य वाकहि खूब जरुरी है। अभी लोभ 100 तथ्य पुस्तिका छप रही है, जो इन्सान को सन्तोषी बनाने में कामयाब होगी।

पापों का बाप लोभ है, उसमें सन्तोष गुण लाने यह कामयाबी प्रकाशन होने जा रहा है।

आपकी खूब अन्तर हृदय से अनुमोदना है।
तुम जीओ हजारों साल, साल के दिन हो हजार।'

धर्मलाभ!

'सुरान' किंकर
गणिवर्य पूर्णचन्द्रविजय
(डेहलावाले)

मुंबई-पायधुनी (गोडीजी)
26-08-2024

पुण्य सम्राट आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी के शिष्यरत्न द्वारा आशीर्वचन

श्रमणोपासक जुगराजजी!!

धर्मलाभ!

आगम ग्रंथ उत्तराध्ययन सूत्र में लोभ का वर्णन करते हुए कपिल मुनि का अध्ययन बताया है। जैसे आकाश का कोई अन्त नहीं होता, वैसे मनुष्य के जीवन में इच्छा का कोई अन्त नहीं है, यह इच्छा लोभ का स्वरूप ही है।

शास्त्रों में लोभ को नष्ट करने हेतु एक ही उपाय दिखाया गया है, - 'संतोष'।

संतोष गुण रुपी रत्न लोभ का नाश करने में पूर्ण रूप से समर्थ है, ऐसी अनुभव वाणी है।

जैन दर्शन में संतोष हेतु ही 12 व्रत का स्वरूप बताया है। ऐसे लोभ दमन हेतु जुगराजजी (जे.के. संघवीजी) का पुरुषार्थ वास्तविक दृष्टि से सभी को सही मार्ग दिखाने वाला होगा ही। धन धान्य आदि बाह्य लोभ एवं पद-प्रतिष्ठा आदि आंतरिक की विभावना से सभी दूर हो यही पुस्तक प्रकाशन वक्त निर्मल भावना।

लिखी
गुरुजयन्त अंतेवासी
मुनि जिनागमरत्नविजय

समर्पण्-सूरत
वि.सं. 2081, ज्येष्ठ कृष्णा 6

संतोष एवं लोभ...

जीवन में सुख एवं दुःख के
यही दो मूल कारण है...

इच्छाएं आकाश समान अनंत है,
ज्यों ज्यों इच्छाएं बढ़ती हैं
त्यों त्यों लोभ बढ़ता हैं,
कितनी भी इच्छाएं करो लेकिन
मिलेगा कर्म के अनुसार ही...
इच्छा अनुसार
प्राप्ति नहीं होगी तो
फिर आर्त रौद्र के शिकार बनोगे,
प्राप्ति हो गई तो लोभ बढ़ेगा...
इससे बेहतर है की जो भी संयोग
निर्मित होते है उसमें संतोष रखो...
संतोष से समत्व का प्रारंभ होता है...
संतोष गुण सुखी जीवन की चाबी हैं.!

परम तारक दादा गुरुदेव समर्पित,
पुण्य सम्राट के मानस पुत्र
आहोर निवासी जे.के. संघवीजी ने लोभ मुक्त के उपाय का संकलन प्रगट कर आत्मार्थिओ को सरल बनने का आलंबन दिया है, सभी आत्म निरीक्षण में आगे बढ़े यही शुभ कामनाएं..

लि:
मधुकर सेवक
कमलेश हीरालाल भणसाली, थराद

आत्मा के चारित्र गुण को घात करने वाले चार कषायों में से लोभ रूपी कषाय पर विजय पाना अत्यंत कठिन है। लोभ का अर्थ सांसारिक संपत्ति की तीव्र इच्छा और भौतिक वस्तुओं का अधिक से अधिक संग्रहण! तब भी श्मसान या पेट के गड्ढे की तरह लोभ का गड्ढा कभी भरता नहीं।

लाखों नदियों का जल लेकर भी समुद्र तथा सागरोपम स्वर्गस्थ सुख भोगने के बाद भी देव कभी तृप्त नहीं हुए। लोभी न कभी बाह्य या आंतरिक सुख को भोगता है और नहीं किसी को भोगने देता है।

संतोष धन अथवा दान प्रवृति ही लोभ पर नियंत्रण कर सकती है।

लोभ 100 तथ्य पुस्तक में, स्पष्ट विचारों के लेखक, चिंतक, श्री जे. के. संघवीजी ने विभिन्न तथ्यों को गहराई में जाकर बहुत ही सरल व स्पष्ट रूप से लोभ को परिभाषित किया है।

शाश्वतधर्म के पूर्व संपादक श्री जे.के संघवी जी ने इसके पूर्व भी क्रोध 100 तथ्य, सामायिक 100 तथ्य, गौतम गणधर 100 तथ्य, रात्रि भोजन 100 तथ्य, ब्रम्हचर्य 100 तथ्य आदि अनेक छोटी-छोटी पुस्तकों के माध्यम से जन जागृति करने का सफल पुरुषार्थ कर रहे हैं।

पूर्व सम्पादित अन्य पुस्तकों की तरह यह पुस्तक भी सुधी पाठकों के लिए अत्यंत उपयोगी साबित होगी।

अंतःकरण से बधाई व शुभकामनाएं!

अशोक श्रीश्रीमाल(इन्दौर)

।। प्रास्ताविकम् ।।

प्रशमरति ग्रंथ में लोभ को सभी गुणों का नाशक बताया है। इसमें क्रोध–मान–माया तीनों कषायों का समावेश हो जाता है।

लोभ मात्र धन का ही नहीं होता। पद, कीर्ति, नाम, यश, शरीर सुखाकारी इत्यादि कई प्रकार से हो सकता है।

एकेन्द्रिय जीव तक लोभ का एक छत्र साम्राज्य छाया हुआ है। सांप, चूहा, बिल्ली, छिपकली जैसे प्राणी भी अपने पूर्व जन्म में संचित सम्पत्ति के स्थान में छिप जाते हैं।

इच्छा को वश में कर सन्तोष धारणकर लिया जाय तो लोभ को वश में किया जा सकता है।

प्रस्तुत लघु पुस्तिका में लोभ को विविध आयामों एवं दृष्टांतों द्वारा समझने का प्रयास किया गया है।

आशा है पाठकगण मेरी पूर्व की पुस्तिकाओं की तरह इससे भी लाभान्वित होंगे।

जिनाज्ञा विरुद्ध कुछ लिखा गया हो तो त्रिविधे–त्रिविधे मिच्छा–मि–दुक्कड़म्।

जे.के. संघवी

(आहोर–थाने)

वि.सं. 2081, श्रावण सुद 5
श्री नेमिनाथ जन्म कल्याणक
शुक्रवार, दि. 09–08–2024

लोभ-100 तथ्य

1. **चार कषायों में लोभ सबसे अधिक खतरनाक है। लोभ के अनर्थों को बताते हुए आचार्यश्री सोमप्रभसूरिजी फरमाते हैं कि जिस प्रकार पतंगा आग की चपेट में आकर भस्मीभूत हो जाता है, उसी प्रकार लोभ की आग में सभी गुण भस्मीभूत हो जाते हैं।**

2. उमास्वातिजी महाराज' प्रशमरति' ग्रंथ में फरमाते हैं कि क्रोध से प्रीति का नाश होता है। मान से विनय का नाश होता है। माया से विश्वास की समाप्ती होती है, किन्तु लोभ से तो सभी गुणों का नाश होता है।

3. **जिस प्रकार ईंधन के समागम से अग्नि प्रज्वलित होती है, उसी प्रकार जीवन में ज्यों-ज्यों धन का आगमन होता है, त्यों-त्यों लोभ की आग बढ़ती जाती है।**

4. भगवान महावीर ने कहा है कि, 'जहा लाहो तहा लोहो' अर्थात् ज्यों-ज्यों लाभ बढ़ता है, त्यों-त्यों लोभ बढ़ता जाता है।

5. **पूर्वकालीन महापुरुषों ने कहा है कि लोभ सभी पापों का बाप है अर्थात् सर्व दुष्कृत्यों को जन्म देने वाला लोभ है।**

6. लोभ के वश पड़ा व्यक्ति अपने हित-अहित को भूल जाता है। लोभी व्यक्ति धन को ही सर्वस्व मान बैठता है और उस धन की वृद्धि के लिए वह अन्याय से भी नहीं डरता है, अनीति को ही धन प्राप्ति का साधन मानता है।

7. **महापुरुषों ने लोभ को सर्व आपत्तियों का स्थान कहा है। लोभी व्यक्ति उपार्जित धन को न तो दान में दे सकता है और न ही उसका उपयोग कर सकता है। ऐसे कृपण व्यक्तियों का धन नष्ट ही होता है।**

8. लोभी व्यक्ति धन पाने के लिए अनेक प्रकार के माया प्रपंच करता है, भोले व्यक्तियों को ठगता है।

9. **धन की तीन गतियाँ है –दान–भोग और नाश। लोभी कृपण व्यक्ति कष्ट से उपार्जित धन को न तो दान में दे सकता है और न ही उसका उपभोग कर सकता है। ऐसे कृपण व्यक्तियों का धन नष्ट ही होता है।**

10. लोभ के कारण धन में अत्यंत लुब्ध बना व्यक्ति अपने अर्जित धन को भी नहीं भोग पाता है। वह धन के लिए भूख और प्यास दोनों सहन करता है। समय पर न तो भोजन करता है और न ही समय पर सोता है। उसके दिमाग में रात दिन धन, धन और धन ही घूमता है।

11. **लोभी व्यक्ति का जीवन पैदे में छिद्र वाले घड़े की भांति होता है। जिस प्रकार छिद्र वाले घड़े में कितना ही पानी भरा जाय, वह थोडी ही देर में खाली हो जाता है, उसी प्रकार लोभी व्यक्ति को कितनी ही सम्पत्ति क्यों न प्राप्त हो जाय, उसे कभी तृप्ति नहीं होती, उसे अपने धन से थोड़ा सा भी सन्तोष नहीं होता है।**

12. इस दुनियां में सबसे अधिक दुःखी कौन है ? इसका जवाब एक ही है कि अतुल सम्पत्ति का मालिक होने पर भी जो असंतोषी है, वही सर्वाधिक दुःखी है, दरिद्री है।

13. **अति लोभी व्यक्तियों को शिक्षा देते हुए किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि–**

आया था जो सिकन्दर, दुनिया से ले गया क्या ?
थे दोनों हाथ खाली, बाहर कफन से निकले।
राजाओं के राजा और मुल्कों के मालिक थे।
सिकन्दर चले गए तब, दोनों हाथ खाली थे ।

14. लोभी व्यक्ति की क्षमा भी वास्तविक क्षमा नहीं होगी, परन्तु उस क्षमा में भी दम्भ होगा।

15. **लोभी व्यक्ति की नम्रता भी दूसरों को अच्छी तरह से ठगने के लिए**

होती है।

16. एक पैर पर खड़ा बगुला कितना शान्त दिखाई देता है? परन्तु उसकी वह शान्ति माया से परिपूर्ण होती है। बस, इसी प्रकार लोभी व्यक्ति का व्यवहार मायापूर्ण ही होता है।

17. **लोभी व्यक्ति अहिंसक नहीं हो सकता क्यों कि धन के लोभ में आकर वह किसी की हत्या भी कर सकता है।**

18. लोभी व्यक्ति सत्यवादी भी नहीं रह सकता, क्योंकि धन का लोभ उसे झूठ बोलने के लिए प्रेरित करता है।

19. **लोभी व्यक्ति अचौर्यव्रत का भी पालन नहीं कर सकता क्योंकि धन के लोभ में आकर टेक्स आदि की चोरी किए बिना नहीं रह सकता।**

20. लोभी व्यक्ति अपरिग्रही भी नहीं रह सकता क्योंकि धन की वृद्धि तो उसे प्राणों से भी अधिक प्यारी होती है।

21. **लोभी व्यक्ति दानवीर नहीं बन सकता क्यों कि धनतो उसका 11 वॉ प्राण होता है। धन का त्याग उसके लिए असह्य होता है। दान की बात आते ही उसे पसीना छूटने लगता है।**

22. लोभी व्यक्ति स्वाध्याय नहीं कर सकता। वह सोचता है कि इतने घंटे व्यर्थ गंवाये, इसके बजाय तो दुकान पर बैठेंगे तो कितना व्यापार हो सकेगा।

23. **कई लोभी व्यक्ति जिनवाणी (प्रवचन) का श्रवण भी नहीं करते हैं, क्योंकि उन्हें यह भय रहता है, कि व्याख्यान– में कहीं दान की बात आ गयी तो मुझे लाज शर्म से भी कुछ देना पड़ेगा, इसके बजाए व्याख्यान में जाए ही नहीं तो कम–से–कम इतना धन तो बच सकेगा।**

24. नदियों के जल से सागर – तृप्त नहीं होता, उसी प्रकार अमाप धन की प्राप्ति से भी लोभी को संतोष नहीं होता है।

25. **प्राणातिपात आदि द्रव्य पापों में हिंसा रूपी पाप का स्थान सबसे आगे है, उसी प्रकार अभ्यंतर– आंतरिक भाव पापस्थानक क्रोधादि में लोभ सबसे बड़ा पाप है।**

26. छोटे–बडे, बालक–वृद्ध सभी में लोभ की मात्रा मौजूद है।

27. **लोभ एक ऐसा पापस्थानक है जिसमें क्रोध–मान–माया तीनों कषायों का समावेश हो जाता है। तीव्र लोभी लोभवृत्ति के कारण क्रोध भी करता है। मान–माया का सेवन करके भी वह लोभ–ईच्छा को पूर्ण करता है।**

28. मोहनीय कर्म से लोभ का उदय होता है फिर लोभ के उदय से मोहनीय कर्म का बंध होता है। इसी क्रम के कारण अनादि अनन्त काल जीव का इस संसार में व्यतीत हो गया, उसका अन्त नहीं आया।

29. **लोभ को जीत लिया जाय तो लोभ से मोहनीय कर्म अथवा मोहनीय कर्म का नाश कर दिया जाय तो मोह आने की संभावना ही नहीं रह जाये।**

30. लोभ और मोह का अभेद सम्बन्ध है, दोनों एक दूसरे के पूरक भी है एवं एक–दूसरे के जनक भी हैं।

31. **मनुष्य को अपने हित से विपरीत दिशा में जो ले जाये वह व्यसन है। उसके आने का राजमार्ग लोभ है।**

32. लोभ के जाल में फँसा व्यक्ति एक क्षण के लिए भी सुख प्राप्त नहीं कर सकता।

33. **सभी प्रकार के विनाशों का आश्रय स्थान लोभ है।**

34. लोभ मात्र रुपये–पैसे का ही होता है, ऐसी बात नहीं है। दुनियाँ में एक भी वस्तु ऐसी नहीं है, जिसके विषय में लोभ होने की संभावना नहीं हो।

35. **योग शास्त्र में कहा है–**

प्राप्योपशान्तमोहत्वं, क्रोधादि विजये सति।
लोभांश मात्र दोषेण, पतन्ति यतंयोऽपि हि।

क्रोध, मान, माया पर विजय प्राप्त कर उपशान्त गुणस्थान पर चढ़ा हुआ साधक भी अंशमात्र लोभ के दोष से पतित हो जाता है।

36. गुणस्थानक के क्रम में दसवें गुणस्थानक में क्रोध–मान–माया तीनों प्रबल कषायों का क्षय कर विकास की दिशा में आगे बढ़ते आत्मा में सूक्ष्म लोभ भी उदय में आ जावे तो आत्मा के पतन में वह समर्थ है।

37. **हम प्रतिक्रमण करने उपाश्रय में जाते हैं, वहाँ भी पहले बैठक की जगह ढूंढते हैं, उसमें भी यह देखते हैं कि बारी या दरवाजे के पास ऐसी जगह मिल जाये जहाँ हवा अच्छी तरह आती हो ? क्या शरीर की सुखाकारी का यह लोभ नहीं है ? उसी प्रकार मात्र पैसा या वस्तु में ही लोभ नहीं, लोभ के अनेक सूक्ष्म प्रकार हैं।**

38. गुजराती में कहावत है– ज्यां लोभीया होय त्यां धूतारा भूखे न मरे' क्यों कि धूर्त लोगों को ठगने का काम करते हैं व लोभी लोग जल्दी उनका शिकार बन जाते हैं।

39. **लोभ को जन्म देने वाली माता है – इच्छा, प्रथम मन में इच्छा जागृत होती है, फिर मानव लोभ के अधीन हो जाता है। उत्तराध्ययन सूत्र में कहा है–'इच्छा हु आगास समा अणंता' इच्छा आकाश के समान अनंत है अर्थात् उसका कोई अंत नहीं है।**

40. लोभ के आधीन आत्मा परिग्रह की जंजीर में बंध जाता है। परिग्रह के पाप से भारी बनकर नरक गति को प्राप्त करता है।

41. **धन प्राप्ति के लोभ के कारण ही आज कई परिवारों में पिता–पुत्र, भाई–भाई में झगड़े हो रहे हैं।**

42. लोभ का अर्थ है तृष्णा और परिग्रह का अर्थ है मूर्च्छा। पाँचवे परिग्रह और नौवें लोभ। दोनों पापस्थानक के बीच यही एक बहुत बडा अन्तर है कि अप्राप्त की इच्छा लोभ है और प्राप्त वस्तु पर आसक्ति परिग्रह है।

43. **बड़े से बड़ा पाप हिंसा है। बड़े से बड़ा कर्म मिथ्यात्व मोहनीय है। बडे से बड़ा रोग क्षय रोग और बड़े से बड़ा दोष लोभ है।**

44. अहो! लोभ का एकछत्र साम्राज्य तो देखो! एकेन्द्रिय जीव तक फैला हुआ यह साम्राज्य है। वनस्पति तक धरती के नीचे दबी हुई सम्पत्ति को अपनी जड़ों से पकड़े रखती है।

45. **सॉप, बिल्ली, छिपकली जैसे प्राणी भी अपने पूर्वजन्म की संचित' सम्पत्ति के स्थान में छिप जाते है, वहाँ से किसी भी तरह दूर नहीं जाते हैं।**

46. पिशाच, भूत, प्रेत, यक्ष जैसे दैवीतत्व भी स्वकीय- परकीय धनराशि पर अड्डा जमा देते हैं और यह देखो मूर्छा का दारूण परिणाम: देवलोक के आभूषण, उद्यान, विमान और जलाशयों में मूर्छित हुए देव मरकर वहीं के वहीं एकेन्द्रिय के रूप में जन्म लेते हैं।

47. **सम्पत्ति के बँटवारे के समय बड़ा हिस्सा लेने के लिए परम पूज्य पिताश्री तथा सुपुत्र एक दूसरे के साथ किस प्रकार लड़ते हैं? मानो रोटी के टुकड़े के लिए कुत्ते लड़ते हैं।**

48. दो पडौसी राज्य या दो राष्ट्र सीमा के कारण सतत लड़ते रहते हैं, उसमें जिम्मेदार लोभ ही होता है।

49. **सेठ का मूड उखड़ा हुआ हो तो पुत्र जन्म का हर्ष भी चेहरे पर आने नहीं देते। सेठ पर भयंकर गुस्सा आया हो तो भी हँसते रहना पड़ता है। हृदय के सारे भावों को दबाकर रखना पड़ता है और उपर से हजारों नाटक करने पड़ते हैं। लोभी मनुष्य नाटककला में अपने आप पारंगत हो जाते हैं।**

50. लोभ की एक विशेषता अथवा सच्चाई को समझ लेना आवश्यक है: यह एक ऐसी खाई है कि इसे जैसे-जैसे भरा जाता है, वैसे-वैसे यह और अधिक गहरी होती जाती है।

51. **नदियों के जल से सागर भले ही छलक जाए, परन्तु त्रैलोक्य का राज्य मिलने पर भी लोभ कभी तृप्त नहीं होता।**

52. भोजन और कपड़े जैसी वस्तुओं का हमने अनन्त बार उपयोग किया है, फिर भी लोभ अंशमात्र भी कम नहीं हुआ है। आज भी हमारा मन बिल्कुल खाली है। वही की वही इच्छाएँ पुन: पुन: मन को उत्तेजित करती रहती है।

53. **''श्रुत सागर का मंथन करके मैंने सार निकाला है कि समग्र बुद्धि और समग्र शक्ति का उपयोग एक मात्र लोभ विजय के लिए करना चाहिए।'' – ऐसा कलिकाल सर्वज्ञ कहते हैं।**

54. लोभ के कारण मैं इस तरह धन प्राप्त करूँगा, इस तरह बढ़ाऊँगा, इस तरह उसकी सुरक्षा करूँगा। ऐसी आशा जीवन के अन्तिम दिनों तक मनुष्य सतत पालता रहता है।

55. **यदि आपका पुण्योदय है तो आशा रखें या न रखें, कोई फर्क नहीं पड़ता और यदि इस समय आपका पुण्योदय नहीं है, तो भी आशा रखें या न रखें, कोई फर्क नहीं पड़ता, फिर लोभ रखने से क्या फायदा ?**

56. वही पढ़ा-लिखा है, वही बुद्धिमान है, वही पापभीरू है और वही साधु है, जिसने लोभ को जीत लिया है और निःस्पृहता को अपना लिया है।

57. **जो सुख, संतोष के मुक्त गगन में उडान जैसी स्वाधीनता से मिलता है, वह सुख पराधीनता के पहाड़ के नीचे दबे हुए असंतोषी/लोभी को कैसे मिल सकता है ?**

58. लोभ की जन्मदात्री आशा है, जो आशा का दास है, वह सारे संसार का दास है और जो आशा का स्वामी है, वह सारे संसार का स्वामी

है।

59. **करोड़ों वाक्यों द्वारा जो कहना है, वह एक ही वाक्य में कह देता हूँ। ''आशा का नाश हुआ नहीं और परमपद प्राप्त हुआ नहीं।''**

60. **''ओह! आशा के तीक्ष्ण तीर इस प्रकार बरस रहे हैं कि उससे कैसे बचा जाए, यही सबसे बड़ी समस्या है।'' डोन्टवरी, समाधान बिल्कुल सरल है। संतोष का अभेद्य कवच धारण कर लें बस! आशा के कैसे भी तीर चलें, आप बिल्कुल सलामत हैं।''**

61. जिस प्रकार बड़े से बड़ा मनुष्य चक्रवर्ती है और बड़े से बड़ा देव इन्द्र है, उसी प्रकार बड़े से बड़ा गुण संतोष है।

62. **सारे पदार्थों की आशा तो आप कभी पूरी नहीं कर सकते। परंतु सारे पदार्थों की आशा तो आप अभी के अभी छोड़ सकते हैं। जो आपके अधिकार की बात नहीं है, वहाँ हाथ डालकर क्यों दुःखी होते हैं? अच्छा हो अगर जो बात आपके अधिकार की है, उसे आज ही अपने हाथ में ले लें।**

63. लोभ जब विदा होता है तब सारी सम्पदाएँ पास आ जाती है, शोरगुल से बचने के लिए दोनों हाथों की ऊंगलियों से दोनों कान ढंक दें, तो अन्तर से एक समान आवाज शुरु होती है। लक्ष्मी का लोभ के साथ झगड़ा है। लोभ जाता है तो लक्ष्मी आती है। लोभ जागता है तो लक्ष्मी भागती है।

64. **एक एक वस्तु पर विराग जगाने जाएँ तो सम्भव है कि आयु पूरी हो जाने पर भी कार्य अधूरा रह जाए... इसकी अपेक्षा एक ही काम करो; संतोष अपना लो; सारे संसार के उपर वैराग्य जाग जाएगा। एक-एक वस्तु पर पर्दा डालने के बजाय अपनी आँखों पर ही पलकों के पर्दे डाल दो, सारा संसार दिखाई देना बंद हो जाएगा।**

65. **जो संतुष्ट है, वही मुक्तात्मा है! क्योंकि जिस सुख का अनुभव मुक्तात्मा करती है, लगभग उसी सुख का अनुभव संतुष्ट व्यक्ति भी**

करता है।

66. संतोष रूपी सुख शिवसुख का कारण है.... अब तो समझ में आया ना कि शिवसुख और संतोष सुख दोनों को एक समान क्यों कहा जाता है?

67. **शास्त्रों में तो कहा गया है कि कर्मों से मुक्ति तप के द्वारा मिलती है। समझ लें कि आप संतोष रहित हैं तो आपके सारे तप निष्फल हो जाते हैं।**

68. आत्मा के शुद्ध स्वभाव से अतिरिक्त इस विश्व में और कुछ भी प्राप्त करने योग्य नहीं है; न धन लाभ, न स्वजन लाभ, न पुत्र लाभ, न पद लाभ, न कीर्तिलाभ, न आरोग्य लाभ और न सुख लाभ! – ऐसी श्रद्धा ही मुनियों को संतुष्ट और निस्पृह बनाती है।

69. **इच्छा महादुःख है तथा निस्पृहता महासुख है : सुख–दुःख की यह संक्षिप्त परन्तु बिल्कुल सच्ची व्याख्या है।**

70. लोभ की बात निराली है। निर्धन व्यक्ति एक सौ रुपये की इच्छा करता है। सौ मिलने पर हजार का लोभी बनता है। हजार मिलने पर लाख का लोभ लगता है। लाख मिलने पर करोड का मन होता है। करोड़पति बनने पर राजऋद्धि की इच्छा होती है। राजा बनने पर चक्रवर्ती बनने के भाव जागते हैं। चक्रवर्ती बनने पर देवलोक के सुखों की इच्छा होती है। देवलोक पाने पर इन्द्र बनने की चाहत होती है, इस प्रकार लोभ क्रमशः बढ़ता ही जाता है।

71. **पानी की प्यास तो पानी के पीने से कम पड़ती है, पर धन की प्यास ज्यों–ज्यों धन मिलता है त्यों–त्यों उल्टी बढ़ती जाती है। कहा भी है–**

जो दस बीस पचास भये, शत होत हजार के लाख मागेगी।
कोटी अरब, खरब भये, धरापति होने की चाह जागेगी।

स्वर्ग पाताल को राज मिले, तोइ तृष्णा अधिकी आग लगेगी।
'सुंदर' एक संतोष बिना नर, तेरी तो भूख कभी न मिटेगी।

72. गहराई से देखा जाय तो प्रत्येक व्यक्ति की वास्तविक आवश्यकताएं बहुत ही कम होती है परन्तु लोभ वश आज मानव ने निरर्थक आवश्यकताओं का अम्बार या जाल बना डाला है और फिर उसकी पूर्ति के लिये रात और दिन येन-केन प्रकारेण प्रयत्न भी करता ही चला जाता है। यही उसके दुःखमय जीवन का मूल कारण है।

73. **जीवन में जब तक लोभ की मात्रा को कम कर सन्तोष धारण करने की वृत्ति नहीं बढ़ती, तब तक धन या भौतिक उन्नति चाहे जितनी हो जाय, जीवन सुखमय नहीं बन सकता।**

74. चारों कषायों में लोभ को जीतना ही सबसे कठिन है। इसको जीतने के लिए पहले इसकी उत्पत्ति के कारणों को, इससे होने वाली हानियों को गहराई से समझना अति आवश्यक है। फिर इसके जीतने के उपयों को समझकर उसका चिन्तन-मनन करके नित्य प्रति अभ्यास करना जरुरी है। मात्र पुस्तकों के वांचन या उपदेश आदि के श्रवण से इस भयंकर विषधर का जहर उतरना सम्भव नहीं है।

75. **लोभ उत्पत्ति के कारण – (अ) धन या भौतिक पदार्थों को ही सुख का कारण समझने रूप अज्ञान से, (ब) अपने से ज्यादा धन या भौतिक पदार्थ वाले को सुखी समझने से, (स) समाज में इज्जत या प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिये, (द) सन्तोष को सही स्वरूप व उसके लाभ को नहीं समझने से, (क) अपने से नीचे वालों की तरफ कभी दृष्टि नहीं डालने से, (ख) जीवन की अस्थिरता, धन की चंचलता, कर्मफल आदि आध्यात्मिक विचारों के नित्य चिन्तन-मनन के अभाव से, (ग) पूर्वकृत लोभ मोहनीय नामक कर्म प्रकृति के उदय से (घ) प्राप्त हुए भौतिक पदार्थों पर अत्यधिक राग या ममत्व की बुद्धि रखने से।**

76. टीका, दहेज आदि सभी भयंकर बुराईयाँ इस लोभ के कारण ही पनपती है।

77. **इन्द्रिय विषयों के लोभ से उसकी पूर्ति हेतु विविध पदार्थों का लोभ जगता है और पदार्थों के लिये अनेक बुरे प्रयत्न करने की दुर्भावनाएं जगती है।**

78. लोभ के कारण दूसरों से ईर्ष्या, द्वेष, कलह, लड़ाई–झगड़े आदि करते कोई विचार नहीं होता।

79. **धन या भौतिक पदार्थ ही सुख के कारण नहीं है। क्या सौ रूपये वाले से लाख रुपये वाले हजार गुना सुखी हैं? सुख आखिर संतोष के विचार जागृत करने पर ही मिल सकता है। इसका गहराई से नित्य प्रति चिन्तन–मनन करते रहना चाहिये।**

80. मुझे ज्यादा धन वाले सुखी लगते हैं पर वस्तुतः यह सही नहीं है। जिस प्रकार मुझसे अधिक गरीब को मैं बहुत सुखी दिखाई देता हू पर वास्तव में जिस प्रकार मैं सुखी नहीं हूँ, ठीक उसी प्रकार मुझसे ज्यादा धन वालों को मैं सुखी समझता हूँ और उनके जैसा बनकर सुखी बनने की कल्पना करता हुँ–पर यह वास्तविकता नहीं है, यह मेरे अज्ञान का फल है। वास्तविक सुखी तो विचारों में सन्तोष की मात्रा बढ़ाने से ही हो सकूंगा–इस प्रकार का चिन्तन भी लोभ को जीतने के लिए उपयोगी है।

81. **लोभ को जीतने के लिये संतोष अपनाने हेतु एक कवि ने कहा है कि –**

गोधन, गजधन, रत्नधन, कंचन खान सुखान।
जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूलि समान।।

82. यह चिन्तन करें कि समाज में इज्जत या नामवारी भी मात्र पैसे से ही नहीं हो सकती। सच्ची इज्जत क्षमा, परोपकार, सरलता आदि सद्‌गुणों से ही प्राप्त होती है।

83. **साधु के पास अति सीमित सामग्री व रूपये–पैसे कुछ भी नहीं होते हुए भी वह सम्पन्न लोगों से भी असंख्य गुना ज्यादा सुखी है। इस प्रकार चिन्तन करते हुए अपने अन्दर सन्तोष जागृत करने का प्रयत्न करना**

चाहिये।

84. लोभ को जीतने के लिये प्रातः सायं निम्न चिन्तन नियमित रूप से करते रहना चाहिये– (i) मेरे लिये कितना धन पर्याप्त है?

85. **(ii) मैं निरर्थक आवश्यकताओं को तो नहीं बढ़ा रहा हूं।**

86. (iii) धन के लिये मैं जो भी पाप करूंगा, उसे मुझे स्वयं को ही भुगतना पड़ेगा।

87. **(iv) इस लोक में भी जब धन के लिये चोरी करने वाले पकड़े जाने पर जेल की सजा व यातना स्वयं भुगतते हैं, कोई अन्य हिस्सा नहीं बंटाता तब पर लोक में नरक, तिर्यञ्च आदि दुर्गतियों में दुःख भोगते समय कौन रक्षा कर सकेगा?**

88. (v) मैं जन्मा जब क्या साथ लाया और मरुंगा तब क्या साथ में ले जाऊंगा?

89. **(vi) मरते समय सिकन्दर जैसे को भी पश्चाताप करना पड़ा, फिर मैं पहले से ही क्यों न सम्भल जाऊं?**

90. (vii) अनित्य, अशरण, संसार और एकत्व–इन चार भावनाओं का गहराई से, शांत चित्त से नित्य चिन्तन–मनन करना चाहिये।

91. **पर पदार्थों की प्राप्ति में तृष्णा के परिणाम को लोभ कषाय कहा गया है।**

92. योग शास्त्र में लोभ की अनर्थकारिता का निरुपण करते हुए कहा है कि

“आकरः सर्वदोषाणां, गुणग्रसनराक्षसः।
कन्दो व्यसनवल्लीनां, लोभः सर्वार्थबाधकः ।।4–18।।”

– लोभ यह सर्व दोषों की खान है। गुणों को खा जाने से राक्षस तुल्य है। संकटों रुपी वेलड़ी के कन्द समान है एवं सभी पुरुषार्थों में बाधा उत्पन्न करनेवाला है।

93. **योगसार में कहा गया है–**

त्रिलोक्यामपि ये दोषा–स्ते सर्वे लोभसंभवाः।
गुणास्तथैव ये केऽपि, ते सर्वे लोभ वर्जनात्।।5–18।।

तीनों लोक में जो दोष दिखाई देते हैं, वे सभी लोभ से उत्पन्न हुए हैं एवं जो कोई गुण दिखाई देते हैं, वे सभी लोभ के त्याग से उत्पन्न हुए हैं।

94. लाभ से लोभ का बढ़ना, संग्रहवृत्ति होना, नये–नये पदार्थों की तृष्णा जागना, प्राप्त संपत्ति आदि में असंतोष होना, ये सभी लोभ के विकार हैं।

95. **पांचों इन्द्रियों के विषयों एवं धन के अंबार को अनंती बार भोगा, लेकिन लोभ का एक अंश भी पूर्ण नहीं हुआ, इस संसार में लोभ का एकछत्री साम्राज्य प्रवर्तमान है।**

96. योग शास्त्र ग्रंथ में लोभ को सागर की उपमा देते हुए उसके नाश का उपाय बताते हुए कहा है–

लोभसागरमुद्वेल–मतिवेलं महामतिः।
संतोषसेतु बन्धेन, प्रसरन्तं निवारयेत् ।।4–22।।

महाबुद्धिशाली को अतिशय ऊंचे उछलते हुए मौजावाले एवं चारों तरफ प्रसरित लोभसागर को सन्तोष रूपी किनारे से बांधकर रोकना चाहिए।

97. **अति लोभ के वश होकर सागर श्रेष्ठि ने अनेक बार सागर से परदेश की यात्रा की, लेकिन करोड़पति होने की भावना पुरी नहीं हुई एवं सागर में ही जीवन लीला समाप्त हो गई।**

98. लोभ कषाय के कारण सुभूम चक्रवर्ती को सातवीं नरक में जाना पड़ा।

99. **अति लोभियों की कैसी दुर्दशा होती है, उसके लिए मम्मण सेठ का दृष्टान्त विचारणीय है–**

धन के लोभ में पागल बने मम्मण सेठ मौत की परवाह किये बिना मुसलाधार बरसात में नदी में कूदकर बह रही चंदन की लकड़ियों को इकट्ठा कर रहा था।

रानी को यह दृश्य देखकर दया आयी। राजा से सारी बात कहने पर उन्होंने अपने नौकर को उसके पास भेजा। उन्होंने पूछा कि – 'तुम मौत की परवाह किये बिना इस भयंकर बाढ में क्यों कूद रहे हो ?'

उसने कहा– 'मेरे घर दो बैल हैं, परंतु एक बैल के सींग नहीं है, उसके लिये मैं प्रयत्न कर रहा हूँ।'

राजा ने उसे बुलाकर कहा – 'मेरे गोकुल में से जो भी बैल तुम्हें पसंद हो वह ले जाओ।'

मम्मण सेठ ने कहा – 'मुझे ऐसे बैलों की जरुरत नहीं है। मेरे बैल देखिये, फिर बात कीजियेगा।'

राजा श्रेणिक अपने मंत्रीजनों के साथ मम्मण के घर आये। मम्मण श्रेणिक महाराजा को अपने घर के तहखाने में ले गया। वहाँ रत्नों से निर्मित दो सुंदर बैल थे। रत्नों के दिव्य प्रकाश से चारों ओर उज्जवल प्रभा छाई हुई थी। राजा तो विस्मय–विमुग्ध हो गया।

राजा ने कहा – 'अरे मम्मण! इतनी संपत्ति होने पर भी तू यह क्या कर रहा है ?'

मम्मण बोला – 'परन्तु एक बैल के दो सींग नहीं है, इसके लिए मैं प्रयत्न कर रहा हूँ।'

राजा को आश्चर्य हुआ, क्योंकि उस बैल के शरीर पर जो रत्न जड़े थे, उसकी कीमत तो सम्पूर्ण राज्य के दान से भी अधिक थी।

राजा ने पूछा – 'तू क्या खाता है ?'

मम्मण बोला – 'चवले का साग और लूखी रोटी खाता हूँ।'

धन लोभ द्वारा परिग्रह वृत्ति की तीव्र ममता को देखकर राजा को अत्यंत दुःख हुआ। इस ममता के कारण मम्मण मरकर सातवीं नरक में गया।

100. धनलोभ की एक घटना है – ‘अमेरिका के एक अरबपति धनाढ्य सेठ की। वह एक बड़े मकान में रहता था। उस मकान में एक बड़ा हॉल था। उस हॉल में पुनः एक छोटा सा कमरा था। उस कमरे में तिजोरी थी। उस तिजोरी में करोड़ों मूल्य के हीरे–जवाहरात थे।

वह प्रतिदिन शाम को 6 बजे तिजोरी का निरीक्षण कर 7 बजे बाहर निकलता था। उस हॉल में चारों और दरवाजे थे और उन पर चौकीदार पहरा देते थे।

एक दिन वह सेठ 6 बजे अपनी तिजोरीवाले कमरे में पहुंचा और अपनी सम्पूर्ण रकम गिनने लगा। रकम गिनने में सेठ को डेढ घंटा लग गया। पहरेदारों ने सोचा–‘सेठ बाहर निकल गये होंगे।’ अतः सभी दरवाजे बराबर बंद कर दिये।

सेठ अंदर ही रह गया और चिन्ता में पड़ गया कि मेरा यह धन तो मेरी बीसवीं पीढ़ी में समाप्त हो जायेगा और इसी चिन्ता में सेठ को हृदयाघात (हार्ट अटेक) हो गया। सेठ सदा के लिए चल बसे।

101. **लोभी व्यक्ति क्या नहीं करता ? किसी कवि ने ठीक ही कहा है–**

पूज्य पिता से लडता लोभी, भाई की हत्या करता।
केवल नश्वर धन के खातिर, भयंकर युद्ध भी करता ।।

इतिहास के पृष्ठ पर जिनका नाम स्वर्णाक्षरों से अंकित है, ऐसे श्रेणिक महाराजा के नाम से कौन अपरिचित होगा ? जिनके रोम–रोम में महावीर प्रभु के प्रति अपूर्व भक्ति थी। प्रातःकाल में उन्हें महावीर प्रभु के विहार की दिशा का ख्याल आता, उस दिशा में स्वर्ण के स्वस्तिक रचकर प्रभु के प्रति अपना आदरभाव व्यक्त करते। प्रभु के आगमन को सुनकर उनका देह रोमांचित हो जाता। प्रभु भक्ति के

प्रभाव से ही जिन्होंने तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जित किया था।

ऐसे ही श्रेणिक महाराजा की कुलांगार संतान कोणिक! जिस कोणिक ने राज्य प्राप्ति के लोभ में अपने उपकारी पिता को ही जेल के सिकंजों में डलवा दिया था। भयंकर बुरी हालत में रखते हुए उन्हें प्रतिदिन सौ–सौ हंटर लगवाता था।

102. धन के लोभ में मित्र ने मित्र की हत्या की।

दो मित्र अर्थाजन के लिए घर छोड़कर रवाना हुए। जंगल में रास्ते में उन्हें एक सोने की ईंट दिखाई दी। दोनों मित्रों ने उस सोने को आपस में बांटने का निर्णय लिया। काफी देर चलते रहने के कारण दोनों थक चुके थे, उन्हें भूख भी लगी हुई थी।

एक मित्र ने दूसरे मित्र से कहा– 'तुम बाजार में जाकर मिठाई खरीद कर ले आओ, ताकि हमारी भूख शान्त हो सके।'

एक मित्र मिठाई लेने के लिए बाजार में चला गया। उसने बाजार में जाकर मिठाई खरीद ली। उसी समय उसके दिमाग में लोभ का भूत सवार हो गया। उसने सोचा– 'यदि मैं दूसरे लड्डू में जहर मिला दूं और वह लड्डू मित्र को दे दूं तो वह सोने की ईंट मुझे मिल जायेगी। इस प्रकार विचार कर उसने एक लड्डू में जहर मिला दिया।

इस मित्र के दिमाग में जैसे ही लोभ का भूत सवार हुआ, उसी समय उस मित्र के दिमाग में भी वह होने की पूरी ईंट पा लेने का विचार उत्पन्न हुआ। उस मित्र ने सोचा – 'क्यों न कुएं में से पानी लाने के बहाने मैं उसे कुएं में धकेल दूं। यदि वह मर जाएगा तो सोने की पूरी ईंट मुझे मिल सकेगी।' इस प्रकार विचार कर वह उस मित्र का इंतजार करने लगा। थोडी ही देर में वह मित्र बाजार में से लड्डू लेकर आ गया। जैसे ही वह लड्डु लेकर आया, दूसरे मित्र ने कहा– ''मुझे प्यास लगी है, पास ही के कुएं में से थोडा पानी लेकर आओ।' वह मित्र पानी लेने के लिए कुएं के पास गया। जैसे ही वह

कुएं के किनारे खडे रहकर पानी निकलने लगा, त्यों ही दूसरे मित्र ने आकर उसे कुएं में धक्का मार दिया। वह मित्र कुएं में गिर पड़ा और थोडी ही देर में मर्मस्थल पर लगे आघात के कारण उसकी मृत्यु होगई।

अपने मित्र की हत्या कर वह उस वृक्ष के नीचे गया, जहां सोने की ईंट पड़ी हुयी थी। वह सोने की ईट को देख-देखकर खुश हो रहा था। इधर उसे कडकडाहट की भूख लगी हुई थी। बाजार से लाए हुए लड्डुओं को देखकर उसके मुँह में पानी आ गया, तुरन्त ही उसने वही लड्डू खाया, जिसमें जहर मिला हुआ था। लड्डु खाने के थोड़ी ही देर बाद में विष का प्रभाव दिखाई देने लगा और कुछ ही देर में उसकी भी मृत्यु हो गई।

सोने की ईट वहीं की वहीं रह गई और उसके लोभ में दोनों मित्र वहीं ढेर हो गए।

103 लोभ पर कपिल मुनि का दृष्टांत –

कौशाम्बी नगरी में जितशत्रु राजा राज्य करता था। इस नगर में काश्यप नामक ब्राह्मण रहता था। वह चौदह विद्या का पारगामी होने से नगरजनों व राजा का प्रिय था। राजा ने उसकी बड़ी आजीविका की व्यवस्था की थी। काश्यप को यशा नामक पत्नी थी। उसे कपिल नामक पुत्र हुआ। उस बालक की छोटी उम्र में ही पिता काश्यप की मृत्यु हो गयी। उसका स्थान राजा ने दूसरे ब्राह्मण को दिया। वह ब्राह्मण हमेशा अश्व पर आरूढ़ होकर सिर पर छत्र धारण कर राजसभा में जाता था।

एक बार उसको देखकर यशा का दिल भर आया। वह रोने लगी। कपिल के पूछने पर माता ने बताया– 'हे वत्स! पहले तुम्हारे पिताजी इतनी समृद्धि के साथ ठाट-बाट से राजसभा में जाते थे। मृत्यु के बाद तू अविद्वान् होने से तेरे पिता का स्थान इस ब्राह्मण को मिला है। यह

देखकर मुझे रोना आ रहा है।' कपिल ने कहा – ' तो फिर विद्या प्राप्त करूं।' यशा ने कहा – 'हे वत्स! इस ब्राह्मण के भय से तुझे इस नगर में तो कोई पढ़ायेगा नहीं, इसलिए तु श्रावस्ती नगरी में जा। वहाँ तेरे पिता के मित्र इंद्रदत्त नामक ब्राह्मण रहते हैं, वे तुझे पढ़ायेंगे।' यह सुनकर कपिल माता की आज्ञा लेकर श्रावस्ती नगरी में इंद्रदत्त के पास आया।

इन्द्रदत्त द्वारा पूछने पर कपिल ने सारा वृत्तांत सुनाया। यह सुनकर अपने मित्र का पुत्र जानकर उसे प्रीतिपूर्वक पढ़ाने लगे। परंतु अपने घर प्रतिदिन भोजन कराने की शक्ति नहीं होने से इंद्रदत्त ने उसी नगर में रहने वाले शालिभद्र सेठ के यहाँ जाकर कहा – 'आप यदि इस ब्राह्मण के पुत्र को प्रतिदिन भोजन की व्यवस्था कर दो, तो आपकी कृपा से वह निश्चिंत होकर शास्त्राभ्यास कर सकेगा।' सेठ की अनुमति मिलने से कपिल हमेशा सेठ के घर भोजन कर इंद्रदत्त के पास शास्त्र का अभ्यास करने लगा। कुछ समय बाद शालिभद्र सेठ के घर कपिल को भोजन पिरसने वाली दासी के साथ प्रीति हुई। अनुक्रम से उसके साथ क्रीड़ा करते हुए दासी गर्भवती हुई। तब उसने कपिल से कहा – 'मैं आपकी पत्नी हुई हूँ। मेरे पेट में आपसे गर्भ उत्पन्न हुआ है, अतः आप मेरा भरण–पोषण करें।' यह सुनकर कपिल मन से व्यथित हुआ। अत्यंत चिन्ता के कारण रात को उसे निंद भी नहीं आयी। पुनः दासी ने कहा – 'स्वामी आप खेद नहीं करें। मैं तुम्हें एक उपाय बताती हूँ कि इस नगर में धन नामक एक सेठ रहता है। उसे प्रातःकाल में जो प्रथम आशीर्वाद देता है, उसे सेठ दो माशा (एक सुवर्ण मुद्रा) देता है। आप प्रभात से पहले जाकर आशीर्वाद देवें। जिससे आपको दो माशा सुवर्ण मिलेगा।'

यह सुनकर कपिल आधी रात को उठकर प्रथम पहुंचने की भावना से जाने लगा। मार्ग में नगर के आरक्षक ने चोर की शंका से उसे पकड़ कर

बांध दिया एवं सुबह राजसभा में राजा के समक्ष खड़ा किया। राजा ने पूछा – 'तुम कौन हो? एवं आधी रात को क्यों बाहर निकले थे?' कपिल ने अपना सारा सत्य वृत्तांत राजा के समक्ष कहा। उसकी सत्यनिष्ठा से प्रसन्न होकर राजा ने कहा – 'तुम्हारी जितनी इच्छा हो उतना धन मांग लो, मैं दूंगा।' कपिल बोला – ' मैं विचार करके मांगूंगा।' राजा ने कहा – ' विचार करने के लिए पास के अशोक वन में चले जाओ।'

उद्यान में आकर कपिल विचार करने लगा कि यदि मैं दो माशा सुवर्ण मांगूंगा तो इससे मेरी प्रिया को मात्र साड़ी ला सकूंगा, लेकिन अलंकारादि तो नहीं हो सकते। अतः राजा के पास हजार मागूं, लेकिन इससे पुत्र के विवाहादिक कार्य नहीं हो पायेंगे। क्यो न एक कोटि (करोड़) मांगूं? यह विचार करते–करते उसे एकदम वैराग्य उत्पन्न हुआ। वह सोचने लगा कि मैं मात्र दो माशा सुवर्ण के लिए निकला था और अब राजा मुझे इच्छित द्रव्य देने के लिए कह रहा है, जिससे लाख और करोड द्रव्य से भी मन तृप्त नहीं हो रहा है। थोड़ा भी लोभ लाभ के आशा से अत्यंत वृद्धि को प्राप्त करता है। इसलिए संतोष रूपी सुख का नाश करने वाले लोभ को ही अर्थात् तृष्णा को धिक्कार है। माता की आज्ञा से मैं परदेश विद्या प्राप्त करने के लिए आया हूँ। उसके बजाय मैंने माता और गुरुजन के वचनों का लोप किया एवं कुलाचार का त्यागकर विषयासुख में लुब्ध बनकर अयोग्य कृत्य किया। इस प्रकार चिंतन करते हुए कपिल को जाति स्मरण ज्ञान की प्राप्ति हुयी। तुरन्त ही स्वयं बुद्ध कपिल ने मस्तक का पंचमुष्ठि लोच किया एवं देवताओं द्वारा प्रदत्त् साधुवेष धारण किया। इस प्रकार चारित्र ग्रहण कर कपिल मुनि राजा के पास आये। राजा ने पूछा– 'आपने क्या विचार किया?' कपिल मुनि ने अपने किये हुए मनोरथ को श्रेणी राजा के पास रखकर अंत में कहा कि जैसे–जैसे लाभ

मिलता है, वैसे–वैसे लोभ की वृद्धि होती है। दो माशा सुवर्ण से जो कार्य हो रहा था, वह कोटि द्रव्य से भी पूर्ण नहीं हो पा रहा था। यह बात सुनकर राजा ने प्रसन्न होकर कहा –'यह व्रत आप छोड़ दो। मैं तुम्हें कोटि द्रव्य देता हूँ। आप मनवांछित भोगों को भोगो।' मुनि ने कहा – मुझे निस्पृही को अब असार द्रव्य की कोई जरुरत नहीं है। मैं सर्वथा परिग्रह रहित हो गया हूँ।' राजा को धर्मलाभ देते हुए कपिल मुनि वहाँ से निकलकर पृथ्वीतल पर विचरण करते हुए उग्र तपश्चर्या का आचरण कर केवलज्ञान पाकर मोक्ष में पधारे।

आगामी प्रकाशन

1. पुण्य सम्राट 100 तथ्य
2. मेरी स्वास्थ्य एवं चिकित्सा डायरी

लेखन-संकलन-सम्पादन
जे.के. संघवी
(आहोर-थाने)

आचार्य श्री यतीन्द्रसूरिजी विरचित

लोभ–त्याग सज्झाय

(राग : क्या धन माल को रोता, एक दिन मिट्टी में...)

क्यों नहीं लोभ को छोड़े, लोभ से हो दुरगति का जाना।
श्रीपाल की लक्ष्मी देखी, धवल शेठ लोभाना।
लोभ दशा में मर कर, सातमी नरक हुआ है थाना।।
क्यों...।।1।।

मम्मण शेठ लोभ के वश में, रत्न का वृषभ बनाना।
आर्त्तरौद्र में मर कर पहुंचा, छेली नरक दरम्याना।।
क्यों...।।2।।

ब्रह्मदत्त खंड सातवां साधन, चला आप हो साना।
सप्तम खंड के पदले सप्तम, नर्क महा दुःख पाना।।
क्यों... ।।3।।

सूरि विजय राजेन्द्र गुरु का, सच्चा रंग रंगाना।
''यतीन्द्रसूरि'' के वचनामृत में, भावि नित नित हरसाना।।
क्यों... ।।4।।

आचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी विरचित

लोभ की सज्झाय

(राग : सलूणा)

लोभ तजो तुम मानवी रे, लोभ से सुखकी हाण सलूणा।
लोभवृत्ति से मानवी रे, लोभ से खोवता प्राण सलूणा ।।1।।

लोभ से खा सकता नहीं रे, मम्मण शेठ प्रमाण सलूणा।
नेह संबंध रखता नहीं रे, लोभ है दुःखद जाण सलूणा ।।2।।

लोभ से पूंजी खोवता रे, लोभ से प्रेम प्रणाश सलूणा।
लोभ से दुःख बढ़े अति रे, लोभ से सद्गुण नाश सलूणा ।।3।।

श्रीफल लोभ जहाँ किया रे, खोया था अपना प्राण सलूणा।
चित्त चतुर नर चित्त में रे, ज्ञानी जन की वाण सलूणा ।।4।।

सातवां खंड साधने गया रे, शुभम चक्री कीया लोभ सलूणा।
सागर में जा गिर मरा रे, लोभ का कभी नहि थोभ सलूणा ।।5।।

संतोष नर सुखी सदा रे, संतोष सुख की खाण सलूणा।
संतोष धर लोभ तजे रे, उगे सुख सविहाण सलूणा ।।6।।

सूरि राजेन्द्र प्रकाशियो रे, लोभ है दुःख का मूल सलूणा।
जयंतसेन संतोष सदा रे, होता सब अनुकूल सलूणा ।।7।।

कल्पतरु प्रकाशन द्वारा प्रकाशित साहित्य

		पुस्तक का नाम	संस्करण	लेखक-संपादक
	१.	जयणा पालो - सुखशांति पाओ	१९वाँ	जे.के.संघवी
	२.	विवेकपूर्णआचरण	चतुर्थ	जे.के.संघवी
	३.	समाधि के सोपान	तृतीय	जे.के.संघवी
	४.	ब्रह्मचर्य १०० तत्य	चतुर्थ	जे.के.संघवी
✳	५.	सम्मेतशिखर तीर्थ वंदना	प्रथम	जे.के.संघवी
	६.	२४ तीर्थंकर २० विहरमान स्तुति भावार्थ सह	नवम	जे.के.संघवी
	७.	नवकार करे भव पार	तृतीय	जे.के.संघवी
✳	८.	आईये ! आशातना से बचें		मुनि. भद्रयशवि.
✳	९.	क्रोध दावानल		पू.कुलचंद्रवि.गणि.
	१०.	कत्लखाने १०० तथ्य	१०वाँ	डॉ. नेमीचंद जैन
✳	११.	मांसाहार १०० तथ्य	२०वाँ	डॉ. नेमीचंद जैन
✳	१२.	मांसाहार संभर तथ्ये (मराठी)	९वाँ	डॉ. नेमीचंद जैन
✳	१३.	HUNDRED FACTS ABOUT MEAT	9TH	DR. NEMICHAND JAIN
	१४.	अंडे जैसे जहर को भोजन बनाने की साजिश	अष्टम्	धीरेन्द्र शुक्ल
✳	१५.	मंजुल भक्ति धारा		श्रीमती मंजू पी. जैन
✳	१६.	गुरु मेरे शिरताज हैं		श्रीमती मंजू पी. जैन
✳	१७.	कुमकुम पगलिये आप पधारो		श्रीमती मंजू पी. जैन
✳	१८.	आपका स्वास्थ आपके हाथ		डॉ. रमणिक गडा
✳	१९.	શાકાહાર શા માટે		સુરેશ સરલ
✳	२०.	जानवरों के लिए इस्लामी नजरिया		अलहाफिज.बी.ए.मासरी
	२१.	शांतिनाथ पंचकल्याणक पूजा एवं श्रीमद् राजेन्द्रसूरि अष्टप्रकारी पूजा		संकलन
✳	२२.	अवधू! आतम ज्ञान में रहना...		जे.के.संघवी
	२३.	रुकिये! पढ़िये! सोचिये!!! (विचार पत्रिका) अनियमत कालिन		जे.के.संघवी
✳	२४.	जिन दर्शन-पूजा व ध्वजारोहण	प्रथम	जे.के.संघवी
✳	२५.	विचार वैभव (लेख संग्रह)		जे.के.संघवी
	२६.	सामायिक : समभाव की साधना	तृतीय	जे.के.संघवी
✳	२७.	गुरु गौतम समरिये...	द्वितीय	जे.के.संघवी
✳	२८.	मृत्यु-१०० तथ्य	प्रथम	जे.के.संघवी
	२९.	रात्रि भोजन १०० तथ्य	प्रथम	जे.के.संघवी

आगामी प्रकाशन

१. पुण्य सम्राट १०० तथ्य, २. मेरी स्वास्थ्य एवं चिकित्सा डायरी,

नोट - ✳ निशान वाली पुस्तकें अप्राप्य हैं।

संघवी परिवार के गौरव

(सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय गच्छाधिपति आचार्य
श्री जयानंदसूरिजी म.सा. के शिष्यरत्न)

मुनिराज श्री अर्पणविजयजी म.सा.

(आदि दिलीप संघवी) (दीक्षा - 04-12-17, कलीकुंड तीर्थ)

मुनिराज श्री समर्पणविजयजी म.सा.

(दिलीप कांतिलाल संघवी) (दीक्षा - 26-01-22, शंखेश्वर तीर्थ)

(विदुषी गुरुणीजी श्री मणिप्रभाश्रीजी की सुशिष्या)

साध्वीजी श्री निर्मोहयशाश्रीजी म.सा.

(भावनादेवी दिलीप संघवी) (दीक्षा - 26-01-22, शंखेश्वर तीर्थ)

साध्वीजी श्री निःसंगयशाश्रीजी म.सा.

(कु. देशना दिलीप संघवी) (दीक्षा - 26-01-22, शंखेश्वर तीर्थ)

हमारी बहन

(गुरुणीजी कुशलप्रभाश्रीजी, वसंतबालाश्रीजी की सुशिष्या)

साध्वीजी श्री मुक्तिसमताश्रीजी म.सा.

(श्रीमती सुखी किशोरजी वजावत)
(दीक्षा - 07-05-22, शंखेश्वर तीर्थ)

हमारे भाणेज

(भुवनभानु समुदाय के गणिवर्य श्री यशरत्नविजयजी के शिष्यरत्न)

मुनिराज श्री गुणसाररत्नविजयजी म.सा.

(राकेश चम्पालालजी जीवावत) (दीक्षा-21-04-22, अहमदाबाद)

कोटी-कोटी वंदन...

लोभ कषायों का बाप है। इसमें क्रोध-मान-माया
तीनों कषायों का समावेश हो जाता है।
संसारी जीव मात्र में इसका एक छत्र
साम्राज्य छाया हुआ है।
प्रस्तुत प्रकाशन में विभिन्न आयामों व
दृष्टान्तों द्वारा लोभ विषयक १०० तथ्यों को
समझने का विनम्र प्रयास किया गया है।
इन्हें हम समझें व तद्अनुसार आचरण में लायें।

Mamta Creation
7738408740